आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2009–2011

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : नौंवा | अंक : सातवां | नवम्बर–2011

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in, Website : www.ajaibbani.org

संपादक -

● प्रेम प्रकाश छाबड़ा

मो. 099 50 55 66 71 (राजस्थान)

मो. 098 71 50 19 99 (दिल्ली)

उपसंपादक -

● नन्दनी

विशेष सलाहकार -

● गुरमेल सिंह नौरिया

मो. 099 28 92 53 04

अनुवादक -

● मास्टर प्रताप सिंह

संपादकीय सहयोगी -

● परमजीत सिंह

मुख्य पृष्ठ सज्जा -

● प्रथम सरधारा

05 ● भजन–अभ्यास

07 सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
● नमक हरामी
वारां - भाई गुरदास जी
16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

34 ● धन्य अजायब
मुम्बई में सतसंग के कार्यक्रम की जानकारी

सन्त बानी आश्रम - 16 पी.एस., वाया - मुकलावा तहसील - रायसिंहनगर - 335 039, जिला श्रीगंगानगर (राजस्थान)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा के आदेशानुसार प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्रीगंगानगर –335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

प्रकाशन दिनांक 1 नवम्बर 2011 – 116 – मूल्य – पाँच रुपये

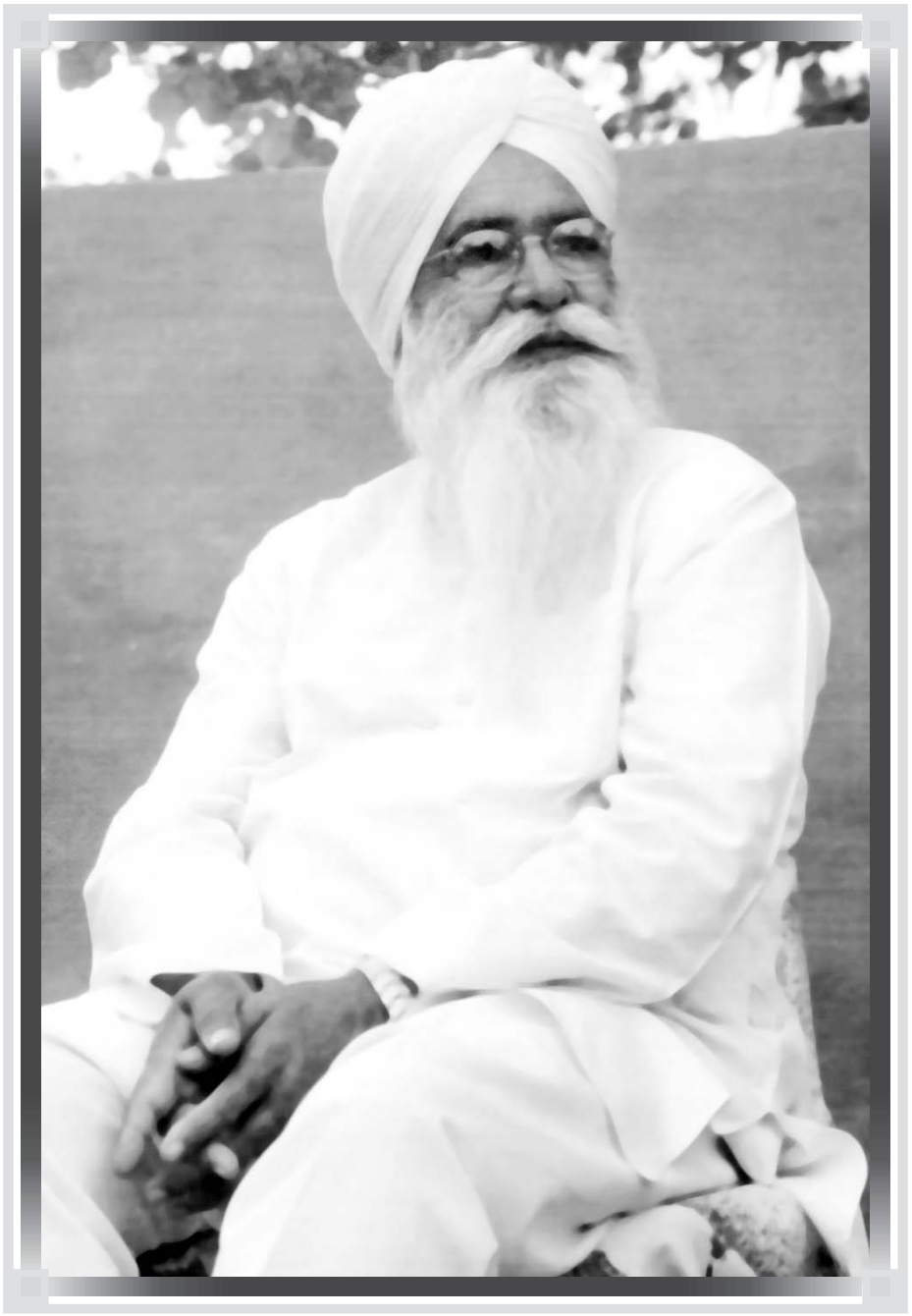

भजन-अभ्यास

परमपिता सर्वशक्तिमान सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमारे ऊपर असीम दया की और हमें अपनी भक्ति का दान दिया। इस भक्ति को हम खेतों में उगा नहीं सकते, बाजार से खरीद नहीं सकते।

इस भक्ति के कारण कोई धोखेबाज हमसे धोखा नहीं कर सकता। इस भक्ति को न हवा उड़ा सकती है, न अग्नि इसे जला सकती है और न चोर इसे चुरा सकता है। हम इस भक्ति को अपने सतगुरु की दया-मेहर से ही प्राप्त कर सकते हैं।

प्यारेयो! मैं आपके साथ भजन-अभ्यास में बैठकर अपार खुशी अनुभव कर रहा हूँ। यह उस पहलवान की तरह है जो बूढ़ा हो जाता है कुश्ती नहीं लड़ सकता फिर भी कसरत करना नहीं छोड़ता क्योंकि वह कसरत से प्यार करता है। इसी तरह व्यापारी चाहे कितना ही बूढ़ा हो जाए, चाहे उसके पास हजारों कर्मचारी काम करते हों फिर भी वह खुद व्यापार करना पसंद करता है क्योंकि ऐसा करने में उसे आनन्द आता है।

जो व्यक्ति नशे का आदी है चाहे वह बूढ़ा हो जाए और नशे के कारण उसका शरीर कमजोर हो जाए फिर भी वह नशे की लज्जत नहीं छोड़ना चाहता क्योंकि वह नशे का आदी है और नशा करना चाहता है; वह अपनी आदत को पूरी करने की कोशिश करता है। इसी तरह जिसे अंदर जाने में आनन्द प्राप्त हुआ हो जब उसे कोई ऐसा प्रेमी मिलता है तो वह उसके साथ भजन-अभ्यास करने का लाभ उठाता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

अमली जीवै अमल खाए त्यों हरिजन जीवै नामु धिआए।

मैं आशा करता हूँ कि आपने यहाँ पर अभ्यास करके जो प्रेरणा और उत्साह प्राप्त किया है आप लोग उसे याद रखेंगे और इस पर चलेंगे। आपको यहाँ बताया गया है कि भजन-अभ्यास करना क्यों जरूरी है और भजन-अभ्यास में बैठने से पहले हमें क्या करना चाहिए।

आप भजन-अभ्यास में बैठने से पहले पाँच पवित्र नामों को अच्छी तरह से याद कर लें। जब आप अभ्यास में बैठें तो मन को बता दें कि अब हम उसकी बात नहीं सुनेंगे क्योंकि अब हम बहुत जरूरी काम के लिए बैठ रहे हैं। आप अपना ध्यान बाहरी चीज़ो से हटाएं, भजन-अभ्यास के समय को बहुत कीमती समझें।

आप जब भजन-अभ्यास में बैठते हैं तो मन अपनी किताब खोल लेता है और आपको परेशान करता है लेकिन आप मन की बात न सुनें। भजन-अभ्यास के समय अगर आप पाँच पवित्र शब्दों के सिमरन के अलावा कुछ और सोच रहे हैं तो आप अपने गुरु का अपमान कर रहे हैं। भजन-अभ्यास करते समय हमारा ध्यान दोनों आँखों के बीच होना चाहिए जहाँ शब्द रूप गुरु बैठा है।

अगर हम भजन-अभ्यास के समय दुनियावी चीज़ों के बारे में सोच रहे हैं तो हम अपने गुरु का आदर नहीं कर रहे। सिमरन करते समय कुछ और सोचना ऐसा है जैसा कि हम पूजनीय पुरुष के सामने कोई बुरी बात कर रहे हैं।

अपनी दोनों आँखें बंद करके अपना सिमरन शुरू करें।

***

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

नमक हरामी

वारां - भाई गुरदास जी

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

सन्त-महात्माओं का जीवन दुनियां में एक आदर्श होता है। ऐसी महान आत्माएं संसार में चानण-मनारा (प्रकाशदीप) की तरह आती हैं। जैसे चानण-मनारा लोगों को राह बताता है उसी तरह सतगुरु आत्माओं को अपने घर की ओर ले जाते हैं बेशक आज तक दुनियां सन्तों और उनके सेवकों की सदा ही निन्दा करती आई है फिर भी सच्चाई छिप नहीं सकती।

गुरु नानकदेव जी के पास जग्गाधारणी आया उसने विनती की, ''महाराज जी! हमारा उद्धार किस तरह होगा और हम परमात्मा से किस तरह मिल सकते हैं? मुझे एक योगी मिला था जिसने मुझसे कहा अगर मैं घर-बार, बाल-बच्चे और धन-दौलत छोड़ दूं तो वह मुझे योगक्रिया सिखाएगा।''

गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''अगर घर-बार छोड़कर, कपड़े रंगकर या साधु बनकर परमात्मा मिलता तो अपने आपको साधु कहलवाने वाले डेरों के लिए, पराई जायदादों के लिए अदालतों में जाकर क्यों झगड़ते? जिन्हें परमात्मा मिल जाता है उनमें सब्र आ जाता है; वे परमात्मा के नियमों के मुताबिक अपना जीवन ढ़ालते हैं। वे अपनी जायदाद तो दूसरों को दे सकते हैं लेकिन दूसरों की जायदाद पर कब्जा करने की बात सोच भी नहीं सकते।''

एक बार एक प्रेमी ने गुरु नानकदेव जी को लंगर के लिए माया भेंट की। आपने भजन-भाव के लिए आए हुए प्रेमियों के लिए लंगर का इंतजाम कर दिया। मर्दाना ने बची हुई माया को गठरी

में बाँध लिया कि किसी और वक्त जब कोई शिष्य नहीं मिलेगा तब यह माया काम आएगी। गुरु नानकदेव जी ने मर्दाना से कहा, ''यह माया फैंक दे यह जहर है। जिस तरह जहर नहीं पचता उसी तरह यह भी नहीं पचेगी।'' मर्दाना ने उस माया को फैंक दिया। गुरु नानकदेव जी की यह खास बात थी कि जब लंगर में माया बच जाती तो आप उस माया को नदी में फैंक देते थे।

गुरु नानकदेव जी करतारपुर में एक किसान की तरह रहते थे। गुरु नानकदेव जी की शरण में आने से पहले अंगददेव जी (भाई लैहणा) देवी के भक्त थे। अंगददेव ने सोचा! गुरु नानकदेव जी को बहुत लोग मानने वाले हैं। आप बहुत तड़क-भड़क में रहते होंगे। आपके बहुत से सेवक सदा आपके साथ रहते होंगे और गाजे-बाजे के साथ आपका यशगान करते होंगे।

गुरु नानकदेव जी अपने खेत से लौट रहे थे, भाई लैहणा आपको रास्ते में मिले। भाई लैहणा ने आपसे पूछा, ''गुरु नानकदेव जी का घर कहाँ है?'' गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''हाँ भई! मैं नानक से तेरी बात करवा देता हूँ। बातचीत के दौरान ही आपकी सादगी का भाई लैहणा पर बहुत असर हुआ उसने अपने पुराने साथियों को छोड़ दिया, 'नाम' लिया और भजन-अभ्यास करके पूर्ण शिष्य बना। जब गुरु नानकदेव जी के बेटों श्रीचन्द और लखमीदास ने अंगददेव से पैसों के लेन-देन के बारे में पूछा तो अंगददेव ने कहा कि मुझे धन के मामलों में न घसीटें।

गुरु अमरदेव जी के दरबार में लंगर हो जाने के बाद रात को बर्तन उल्टे करके रख देते थे कि उन्होंने अगले दिन के लिए कुछ भी इकट्ठा नहीं किया है। पूर्ण महात्माओं का जीवन इसी तरह का होता है।

गुरु रामदास जी ने मसंद प्रणाली शुरू की। उसमें आपने अच्छे अभ्यासियों को सेवा इकट्ठी करने के लिए लगाया। जिन मसंदों को दान इकट्ठा करने की इजाजत दी जाती थी उन्हें बताया जाता था कि दान का धन गुरु और मसंदों के खुद के इस्तेमाल के लिए नहीं है, दान की यह सेवा उनके लिए जहर है।

पांचवे गुरु अर्जुनदेव जी के समय में भी मसंद प्रणाली जारी रही। उन दिनों मसंद अच्छे लोग हुआ करते थे। गुरु अर्जुनदेव जी ने कुछ मसंदो भाई अजायब, उमर सिंह, भाई जोध से पूछा, ''तुम गुरु के खज़ाने को क्या समझते हो?'' उन्होंने कहा, ''मीठा जहर।'' अगर सेवक उसमें से एक पैसा भी खाएगा तो वह मर जाएगा, वह कभी भजन-अभ्यास में कामयाब नहीं होगा।

आप भाई मंझ की कहानी जानते हैं हम लोग उसके बारे में बातें करते हैं लेकिन उस जैसा जीवन जीना बहुत कठिन है। भाई मंझ सब कुछ छोड़कर गुरु के चरणों में इसलिए आया था कि वह बाकी जीवन गुरु के चरणों में बिताएगा। वह सेवा करता और लंगर में खाना खा लेता था। कुछ लोगों ने गुरु अर्जुनदेव जी से भाई मंझ की बड़ाई करनी शुरू कर दी कि वह अच्छी आत्मा है और सेवा भी बहुत करता है।

एक बार गुरु अर्जुनदेव जी ने सबके सामने भाई मंझ से पूछा, ''तुम खाना कहाँ से खाते हो?'' भाई मंझ ने कहा, ''लंगर में ही खाता हूँ।'' गुरु साहब ने कहा, ''इसका मतलब यह है कि तुम मजदूरी करते हो, गुरु के लिए क्या करते हो?'' भाई मंझ ने सोचा! गुरु साहब ठीक कहते हैं। उसने लंगर में खाना बंद कर दिया, वह बर्तनों की जूठन पीकर सेवा करता रहा। तब

गुरु साहब ने कहा, ''तुम चींटियों और दूसरे कीड़ो का खाना खा जाते हो।'' जब उसने सब परिक्षाएं पास कर लीं तो गुरु साहब ने उसे गले से लगाकर कहा, ''तुम जिसे 'नाम' दोगे मैं उसकी संभाल करूंगा अब तुम जीवों को तारने वाले बन गए हो।''

एक बार गुरु हरिराय साहब ने अपने कुछ शिष्यों का ध्यान एक भारी साँप की तरफ लगाया, उस जिन्दा साँप को चींटियाँ खा रही थी। शिष्यों ने कहा कि इस जिन्दा साँप को चींटियाँ खा रही हैं। गुरु हरिराय साहब ने हँसते हुए कहा, ''यह पंडित पूजा की माया खाता था और जगत गुरु कहलवाता था, शिष्यों से खूब धन बटोरता था और उस धन से इसने अपने लिए ऐशो-आराम का सामान बना रखा था। अब इन लोगों की हालत देखो! जो ऐसे झूठे गुरुओं को माया देते हैं वे चींटियाँ बने हुए हैं और यह पंडित साँप की योनि में आकर जीते-जी भुगतान कर रहा है; यह न मरों में है न जिन्दों में है।''

इसी तरह हम गुरु गोबिंद सिंह जी का इतिहास पढ़ते हैं। आप भी जरूरत से ज्यादा पैसों को दरिया में फैंक देते थे। जो मसंद लंगर के लिए दान इकट्ठा करते थे उन्होंने उन पैसों को अपने काम में लेना शुरू कर दिया। वे खुले दिल से खर्च करके शराबी-कबाबी हो गए और काम की अग्नि में सड़ने लगे। गुरु गोबिंद सिंह जी ने उन मसंदो को सजाएं दी और संगत को उनसे सावधान रहने के लिए कहा। आपने कहा, ''अगर एक तरफ से मसंद आ रहा हो और दूसरी तरफ से खूनी हाथी आ रहा हो तो आप मसंद की ओर जाने की बजाय खूनी हाथी की ओर जाएं।''

एक बार कुछ लोगों ने गुरु गोबिंद सिंह जी से पूछा, ''महाराज जी! आप पैसों को दरिया में फैंक देते हैं, यह पैसा गरीब सेवकों

को क्यों नहीं दे देते? संगत में बहुत से गरीब और जरूरतमंद सेवक हैं।'' आपने कहा, ''अगर कोई जहरीला नाग दूध को जूठा कर दे और बच्चा जिद् करे कि मुझे दूध पीना है तो माता उसे वह दूध नहीं देती क्योंकि उसे बच्चे की बेहतरी का पता होता है।'' इसी तरह गुरु जानता है कि ऐसा पैसा सेवक के लिए हजम करना कितना मुश्किल है इसलिए वह अपने सेवकों को दान का पैसा नहीं देते।

आप महाराज सावन सिंह जी का जीवन पढ़ सकते हैं। आप किस तरह अपनी कमाई सफल करते थे। आप पेशावर में बाबा कान्ह के पास कई साल तक जाते रहे। महाराज सावन सिंह जी बाबा कान्ह के आगे अपनी कमाई में से पैसे रख देते। बाबा कान्ह उन पैसों को बच्चों में बाँट देते।

एक बार महाराज सावन सिंह जी लड़ाई में गए और काफी सारे पैसे लाए। जब आप बाबा कान्ह के पास गए तो बाबा कान्ह ने दूर से ही कहा, ''मैं इस बार चिट्टे-चिट्टे गोल-गोल रूपये ज्यादा लूंगा।'' महाराज सावन ने कहा, ''बाबा! तू लालची हो गया है।'' बाबा कान्ह ने कहा, ''मैं लालची नहीं। मैंने रूपये क्या करने हैं भगवान ने तुझे ज्यादा रूपये दिए हैं इसलिए मैं चाहता हूँ कि तेरी कमाई सफल हो जाए।'' महाराज सावन ने सारे पैसे बाबा कान्ह के आगे रख दिए। उसी समय बच्चे आए, बच्चों ने कहा बाबा पैसे दे। बाबा कान्ह ने वह पैसे बच्चों को दे दिए।

महाराज सावन ने बाबा कान्ह से कहा, ''बाबा जी! रूहानियत दें।'' बाबा कान्ह ने कहा, ''मिलेगी जरूर पर किसी और से मिलेगी।'' जब समय आया जयमलसिंह जी स्वयं आए और उन्होंने आपको रूहानियत का खजाना दिया।

अगर मैं आपको महाराज सावन सिंह जी की कहानियाँ बताने लगूँ कि आप किस तरह नेक कमाई करते थे तो कई ग्रंथ बन जाएंगे। जब महाराज सावन सिंह जी ब्यास में डेरा बना रहे थे उस समय वहाँ कोई कुआँ और मकान नहीं था केवल एक कच्ची झोंपड़ी थी। आपने वहाँ कुँआ खुदवाया और मकान बनवाने लगे तो गाँव के लोगों ने कहा कि तुम्हारा दिमाग खराब है इस मकान को दरिया बहाकर ले जाएगा। आपने कहा अगर मेरा गुरु एक बार इस कुएं का पानी पी ले और इस मकान में एक सतसंग कर दें तो मेरी कमाई सफल है।

महाराज सावन सिंह जी को नौकरी से जो तनख्वाह मिलती आप अपनी पूरी तनख्वाह बाबा जयमल सिंह जी के आगे रख देते थे। बाबा जयमल सिंह जी जो ठीक समझते उतना आपके घर के खर्च के लिए दे देते थे। बहुत सी कहानियां बताती हैं कि महाराज सावन ने अपना जीवन कैसे बिताया फिर विरोधियों ने कहा कि आपने सिरसा में जमीन संगत के पैसों से खरीदी है।

एक दिन महाराज सावन ने सतसंग में कहा कि मैं कहना तो नहीं चाहता था लेकिन मुझे यह बात कहनी पड़ रही है कि मैंने सिरसा में जमीन संगत के पैसे से नहीं खरीदी। आप जानते हैं कि बहुत से लोगों ने पंजाब में मंहगी जमीनें बेचकर राजस्थान में ज्यादा जमीनें खरीदी। आपने कहा, ''मैंने पंजाब में जमीन 100 रूपये कनाल बेची है और सिरसा में 4 रूपये कनाल खरीदी है। आप देख लें कितना अंतर है। यह सब मेरे गुरुदेव की दया है। मैंने जमीन का सौदा बाईस हजार में किया जिसमें से एक हजार रूपया बयाना दे दिया; इस राजीनामें के साथ कि अमुक तारीख को शेष रकम चुकता कर दूंगा। किसी कारणवश मैं भुगतान की

तारीख तक बैंक से पैसे नहीं निकाल सका इसलिए मैंने सोचा कि मैं यह सौदा जाने दूं। मेरे बच्चों ने कहा कि पीछे हटने से हमारी बदनामी होगी किसी तरह से पैसों का इंतजाम किया जाए। उस समय मेरे एक दोस्त ने मेरी मदद की उससे रूपये उधार लेकर जमीन खरीद ली फिर बैंक से पैसा निकलवाकर धन्यवाद के साथ उसे पैसा लौटा दिया।''

जिस समय महाराज सावन सिंह जी पैसों का इंतजाम कर रहे थे उस समय मन्नासिंह और मिलखीराम डेरे के खजांची थे। उनके पास डेरे के पाँच हजार रूपये रखे हुए थे। उन्होंने सोचा! क्यों न हम यह रूपया बाबा जी को दे दें इससे वह जमीन खरीद लेंगे बाद में हम उनसे पैसे वापिस लेकर भंडारे में डाल देंगे। महाराज सावन सिंह जी ने इसे स्वीकार नहीं किया और कहा, ''अगर ट्रटू किराए पर लेना है तो किसी रिश्तेदार से लेना जरूरी नहीं, किसी और से क्यों न लिया जाए?'' आपने संगत के पैसे उधार नहीं लिए। गुरुओं की निन्दा करना तो आसान है लेकिन वैसा बनना बहुत मुश्किल है।

महाराज कृपाल 'नाम' की कीमत जानते थे। आप लोगों को अपनी जेब से किराए के पैसे देते कि लोग महाराज सावन सिंह जी के सतसंग में जा सकें 'नामदान' प्राप्त करके काल के पंजे से निकल सकें।

कबीर साहब कहते हैं, ''किसी एक आत्मा को 'नाम' की तरफ लगा देना लाख गायों के जीवन को बचाने से भी अधिक कीमती है।'' गाय एक गरीब जानवर है। ताकतवर जानवर चीते आदि गायों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं? हम इंसान भी अपने स्वाद के लिए उनको मार रहे हैं हमारी आत्मा भी गाय की तरह

बहुत गरीब और मासूम है। कसाई काल आत्मा से वैसा ही व्यवहार कर रहा है जैसे चीते गायों के साथ करते हैं।

जब महाराज कृपाल के प्यारे सतगुरु सावन सिंह जी नहीं रहे तो आप डेरे में नहीं रूके, माथा टेककर वहाँ से चले आए। आप किसी के साथ संसारिक दौलत के लिए नहीं लड़े। ऐसा ही बाबा जयमलसिंह के जीवनकाल में हुआ। जब आपके गुरु ने आगरा में चोला छोड़ा तो आप भी गुरु गद्दी के झगड़े में नहीं पड़े। आप जहाँ भी गए सतगुरु सदा आपके साथ रहा। जहाँ कहीं भी बैठे वह स्थान खुशहाल हो गया। हमें सन्त-महात्माओं के इतिहास से इन घटनाओं का पता चलता है।

यहाँ बहुत से लोग बैठे हैं जो मेरे साथ 30-35 वर्षों से हैं। मैं बताया करता हूँ कि बाबा बिशनदास से मुझे 'दो-शब्द' का भेद मिला था, आप बहुत सख्त थे। मैं अपनी फौज की सारी कमाई आपके आगे रख देता था जिसमें से आप मुझे खर्च करने के लिए पाँच रूपये दिया करते थे। मैं जब आपके आगे ज्यादा पैसे रखता था तो आप मुझे थप्पड़ भी मारते थे। यह मेरा खुद का तजुर्बा है कि सेवा देकर धन्यवाद करवा लेना तो बहुत आसान है लेकिन थप्पड़ खाने बहुत मुश्किल हैं।

बाबा बिशनदास जी मुझे अपने आश्रम से एक प्याला चाय भी नहीं पीने देते थे। उस गांव में मेरी बहन की रिश्तेदारी थी आप मुझे वहाँ भी खाने के लिए नहीं जाने देते थे। उन्होंने एक परिवार के घर में खाने का इंतजाम किया जो बाद में एक सतसंगी के रिश्तेदार बने। केवल आप ही इस भेद को जानते थे कि बर्तन तैयार करने के लिए सख्ती की जरूरत है अगर हम किसी का खाएंगे तो परमात्मा हमारे लिए दरवाजा नहीं खोलेगा।

कबीर साहब कहते हैं, ''किसी का खा लेना बहुत आसान है। मुफ्त में खाना अच्छा लगता है लेकिन यह कर्ज कौन चुकाएगा? कर्मों का लेखा चुकाना बहुत मुश्किल है।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''आप जिसका खाएंगे बैल बनकर या ऊँट बनकर उसका बोझ उठाएंगे।'' आपके आश्रम में एक बग्गा बैल था, एक दिन वह रास्ते के बीच में बैठ गया जिससे लोग आगे नहीं जा सकते थे। प्रेमियों ने महाराज सावन को सारी बात बताई। महाराज जी आए और आपने मुस्कुराकर कहा कि यह सब लेने-देने का सौदा है। तुझे मारने वाले भी वही हैं जिन्हें तुम हलवा खिलाया करते थे। हमें लंगर में यारी-दोस्ती बनाने की आदत होती है। कबीर साहब कहते हैं:

गृही का टुकर बुरा, नौं नौं अंगुल दाँत,
भजन करे तो उबरे, नहीं तो काढ़े आंत।

एक परिवार का लेन-देन चुकाने के लिए हमें लाखों जन्म लेने पड़ते हैं। गुरु रामदास जी कहते हैं:

जोगी हुआ जग भवा, घर घर भिखिया लेह,
दरगह लेखा मंगिए, किस किस उत्तर देहु।

सन्तों का जीवन एक नमूना होता है। मैं अक्सर कहा करता हूँ कि मैं न तो दिल्ली में किसी को जानता था न ही अमेरिका में किसी को जानता था। जब पप्पू मेरे पास आया उस समय यह बच्चा था और ज्यादा से ज्यादा सिनेमा देखता था, इसे इंग्लिश बोलनी भी नहीं आती थी। मैंने पप्पू से कहा कि 'नामदान' ले ले, सब ठीक हो जाएगा; इसने नामदान ले लिया।

जब विश्व यात्रा पर जाने लगे तो बहुत से लोगों ने कहा कि आप इंग्लिश नहीं जानते यह छोटा बच्चा है आप क्या करेंगे? मैंने

कहा, ''मैं इस बारे में कुछ नहीं कह सकता जो मेरे अंदर है वही इस भेद को जानता है क्योंकि यह रिश्ता मैंने नहीं बनाया।''

मैंने इस बच्चे के आगे दो-तीन शर्तें रखी कि किसी भी पश्चिमी प्रेमी के आगे हाथ मत फैलाना। लोग तुम्हें बहुत सी चीजे देना चाहेंगे लेकिन तुम्हारी रोजी-रोटी का फिक्र तुम्हारे सतगुरु को है, वह बेइंसाफ नहीं है। एक बार किसी पश्चिमी प्रेमी ने बिना किसी बात पप्पू को पैसे भेज दिए। बिना मांगे ही आपको कोई पैसे भेज दे तो मना करना कितना मुश्किल होता है? किसी से कुछ स्वीकार करना आसान है लेकिन वापिस देना बहुत मुश्किल है। मैंने पप्पू से कहा, ''तुम इन पैसों को वापिस कर दो।'' मैंने उस प्रेमी को एक चिट्ठी में लिखा कि यह गृहस्थी है इसका धर्म लंगर में सेवा डालने का है न कि खाने का।

शुरू में जब मैं दिल्ली गया संगत में बहुत से लोगों ने कहा, ''पप्पू और उसका परिवार सतसंग के लिए इंतजाम करते हैं हमें उनके खर्च में हिस्सा बँटाना चाहिए।'' मैंने उन लोगों से कहा, ''जहाँ तक मैं सोचता हूँ अगर ये आपसे माँगे तब भी न दें। ये गृहस्थी हैं आपका खाकर किस तरह चुकाएंगे? अगर हम परमात्मा पर विश्वास करें तो वह सब कुछ देता है।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सतगुरु सेवक से लेता भी कुछ नहीं और उसके पास छोड़ता भी कुछ नहीं। सेवक को सतगुरु का होकर रहना पड़ता है।'' जब सिक्ख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी बनी उस समय इसका सदस्य बनने के लिए चार-पाँच शर्तें रखी गई। जो नित नियम से गुरुग्रंथ साहब का पाठ करता हो, सिक्ख मर्यादा में पूरा हो, दसवंद निकालता हो। हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख, ईसाईयों के धार्मिक स्थानों पर झगड़े

इसलिए होते हैं क्योंकि ये सारे माया के झगड़े हैं अगर आपने उसमें अपना दसवंद डालना हो तो झगड़ा किस बात का?

भाई गुरदास जी कहते हैं कि परमात्मा ने हमें धरती, अन्न, पानी, रोशनी और जीवन दिया है। परमात्मा से इतना कुछ प्राप्त करने के बाद भी अगर हम भजन-सिमरन नहीं करते और उसका धन्यवाद नहीं करते तो हम कृतघ्न हैं। हम परमात्मा की कद्र नहीं करते हम **नमक हरामी** हैं।

शाह बलख बुखारा कहते हैं, ''अगर आप परमात्मा का भजन-सिमरन नहीं करते तो आप परमात्मा की बनाई हुई धरती पर न रहें, उसका नमक न खाएं और आपको उसकी दी हुई ज़िंदगी जीने का भी अधिकार नहीं है।''

आपके आगे भाई गुरदास जी की बाणी रखी जा रही है। गुरु अर्जुनदेव जी ने कहा था कि *भाई गुरदास जी की वारें* गुरुग्रंथ साहब की कुंजी है। गुरुग्रंथ साहब को समझने के लिए जरूरी है कि भाई गुरदास जी की वारों को पढ़े और उन पर अमल करें।

एक बार एक चोर शाह के घर चोरी करने गया। उसने सारा सोना चांदी इकट्ठा करके एक पोटली में बांध लिया फिर भी उसे संतुष्टि नहीं हुई। अंदर लोभ का कुत्ता भौंका वह कुछ और ढूंढ़ने लगा तो उसे एक हांडी दिखाई दी उसने समझा कि इसमें चीनी है। उसे चखने के लिए मुँह में डाला लेकिन वह नमक था। उसे फौरन ख्याल आया कि बेशक मैं बुराई करता हूँ पर शाह का नमक मेरे अंदर चला गया है; मैंने **नमक हरामी** नहीं बनना।

उसने सामान की पोटली वहीं छोड़ दी। उसे इतना ज्ञान था कि **नमक हरामी** होना अच्छा नहीं है क्योंकि नमक हरामी को दरगाह में इस तरह पीटते हैं जैसे ढ़ोल पीटा जाता है।

चोरु गइआ घरि साह दै घर अंदरि वड़िआ।
कुछा कूणै भालदा चउबारे चढ़िआ।
सुइना रूपा पंउ बंन्हि अगलाई अड़िआ।
लोभ लहरि हलकाइआ लूण हांडा फड़िआ।
चुखकु लै के चखिआ तिसु कखु न खड़िआ।
लूण हरामी गुनहगारु धडु धमंड़ धड़िआ।
खाधे लूण गुलाम होइ पीहि पाणी ढ़ोवै।
लूण खाइ करि चाकरी रणि टुक टुक होवै।।

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''नौकर अपने मालिक का नमक खाकर उसकी चक्की पीसता है, पानी भरता है, झाड़ू लगाता है। बच्चे माता-पिता का नमक खाकर उनके नाम को चमकाते हैं, उनके सम्मान की रक्षा करते हैं। वे ऐसा कुछ नहीं करते जिससे लोग कहें कि ये अच्छे माता-पिता के बच्चे नहीं हैं।''

लूण खाइ करि चाकरी रणि टुक टुक होवै।

आप कहते हैं, ''फौजी लोग कभी पीछे मुड़कर नहीं देखते युद्ध के मैदान में टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं। वे जानते हैं अगर लड़ाई के मैदान से भाग गए तो उन्हें कृतघ्न कहा जाएगा।''

लूण खाइ धी पुतु होइ सभ लजा धोवै।
लूण वणोटा खाइ कै हथ जोड़ि खड़ोवै।
वाट वटाऊ लूणु खाइ गुणु कंठि परोवै।।

आप कहते हैं, ''नमक खाकर नौकर मालिक के आगे हाथ जोड़कर खड़ा होता है कि मैंने इसका नमक खाया है। कोई चलता हुआ राही भी अगर किसी के घर का नमक खा लेता है तो

वह उस घर की तारीफ करता है कि मैंने फलाने घर का नमक खाया है; मैं वहाँ से तृप्त होकर आया हूँ।''

लूण हरामी गुनहगार मरि जनमु विगोवै।

अब आप प्यार से कहते हैं, ''अगर नौकर अपने मालिक का कत्ल कर दे तो वह **नमक हरामी**, विश्वासघाती हो जाता है। यम ऐसे अपराधी की बुरी दशा करते हैं उसे मारते हैं। वह चौरासी लाख योनियों में जाकर भिखारी बनता है; दरगाह में उसकी बुरी हालत होती है।''

भाई गुरदास जी मामूली आदमी नहीं थे। आप ब्रह्मज्ञानी थे आपको लंबे समय तक गुरुओं की सेवा करने का मौका मिला था। आप तीसरे गुरु अमरदेव जी के भतीजे थे लेकिन आप उनके चरणों में शिष्य के रूप में रहे। आप गुरु रामदास जी, गुरु अर्जुनदेव जी और गुरु हरगोविंद जी की शरण में रहे। जब सतगुरुओं ने चोले छोड़े उस समय आपने कई गद्दियों के उतार-चढ़ाव भी देखे लेकिन आप सदा मजबूत रहे; आप पूरे सिक्ख, परमज्ञानी थे।

जिउ मिरयादा हिंदूआ गऊ मासु अरवाजु।
मुसलमाणाँ सूअरहु सउगंद विआजु।।

जो लोग पूजा के धन पर निगाह रखते हैं वे इस तरह हैं जैसे हिन्दु गाय का माँस नहीं खाते अगर कोई याद भी दिलाए तो हम थूकने लगते हैं कि गाय गरीब है दूध देती है इसे न मारा जाए बल्कि हम मारने वाले को भी बुरा कहते हैं। मुसलमानों ने सूअर न खाने और ब्याज न खाने की सौगंध खाई होती है; जो यह खाता है उसे अच्छा नहीं समझा जाता।

सहुरा घरि जावाईऐ पाणी मदराजु।

सच्चाई का कभी नाश नहीं होता। आज भी बहुत से ऐसे लोग हैं जो लड़की के घर का पानी तक नहीं पीते, वे लड़की के घर के पानी को शराब के तुल्य समझते हैं। मैं अपने पिता जी की तरफ देखता रहा हूँ मेरे पिता जी बहुत सख्त थे। वे इस मामले में बहुत मजबूत रहे कि बेटी को देना ही ठीक है।

सहा न खाई चूहड़ा माइआ मुहताजु।।

छोटी जाति का आदमी दूसरों पर निर्भर करता है। घर-घर माँगता फिरता है लेकिन खरगोश नहीं खाता; वह भी अपना धर्म निभाता है।

जिउ मिठै मखी मरै तिसु होइ अकाजु।।
तिउ धरमसाल दी झाक है विहु खंडूपाजु।
खरा दुहेला जग विचि जिस अंदरि झाकु।
सोइने नो हथु पाइदा हुइ वंझै खाकु।।

जिस तरह मक्खी मीठे के लालच में पर मार-मारकर मर जाती है वह न मीठा खाने का मजा लेती है और न उड़ ही पाती है। उसी तरह जिन लोगों को पूजा का धन खाने की आदत पड़ जाती है उनकी हालत भी मक्खी जैसी हो जाती है। उनका पहले का धन भी पर लगाकर उड़ जाता है। ऐसे लोगों से उनके रिश्तेदार, दोस्त बुरा सलूक करते हैं कि इसने पूजा का धन खाया। ऐसा आदमी सोने में भी हाथ डालता है तो सोना मिट्टी हो जाता है।

इठ मित पुत भाइरा विहरनि सभ साकु।
सोगु विजोगु सरापु है दुरमति नापाकु।।

दान का धन खाने वाले को शोक और वियोग लगा रहेगा उसकी कोई आशा पूरी नहीं होगी अगर कोई किसी को दान देता है वह इसके बदले में कुछ पाने की इच्छा रखता है।

महाराज सावन कहा करते थे, ''परिवार में कोई आदमी बीमार है या बच्चा पढ़ता नहीं है तो औरत उसके सिर के ऊपर से रोटी फेरकर पंडित या भाई को देती है। वह औरत यह इच्छा करती है कि बाबा यह रोटियां खाएगा तो उसका बच्चा ठीक हो जाएगा। सोचकर देखें! क्या उसकी इच्छा पूरी होगी? उन कर्मों को कौन चुकाएगा, उन रोटियों को खाने वाले का क्या बनेगा?''

वतै मुतड़ि रंन जिउ दरि मिलै तलाकु।।

भारत के रीति-रिवाज के अनुसार शादी ज़िंदगी भर के लिए होती है। जिस स्त्री का तलाक हो जाता है उसे उसका पति छोड़ देता है तो सब लोग उससे दूर रहते हैं कोई भी उससे मेल-मिलाप नहीं रखता। सब कहते हैं कि यह अपने पति के साथ नहीं निभा पाई फिर और किसी के साथ क्या निभाएगी? इसकी शादी हुई लेकिन इसने अपने रिश्तेदारों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया और अब दु:ख उठा रही है। इसलिए आप कहते हैं कि दान का धन खाने वालों की ऐसी ही दशा होती है।

दुखु भुखु दालिद घणा दोजक अउताकु।।

उसे अनेक तरह की बीमारियां लगी रहती हैं कभी कोई दु:ख आता है तो कभी कोई दु:ख आता है। कभी घर में खाने के लिए कुछ नहीं होता। उसके लिए नर्क तैयार होते हैं। हम सोचते हैं कि हम नामलेवा हैं शायद हमारे लिए कोई सजा नहीं! मस्ताना जी महाराज सावन सिंह जी के बहुत प्यारे शिष्य थे। आप कहा

करते थे कि गुरु शिष्य को केले की तरह छील देता है गुरु बेलिहाज ताकत है।

न्यायकारी राजा गलती करने वाले को माफ नहीं करता। आज हम जिस राज्य में बैठे हैं पहले यह बीकानेर राज्य कहलाता था। यहाँ के राजा गंगासिंह (जिसके नाम पर गंगानगर शहर का नाम पड़ा) ने न्याय करने के लिए एक तराजू रखा हुआ था। उसका यह ऐलान था कि बेशक प्रभु तो भ्रष्टाचार करने वाले को छोड़ दे लेकिन मेरी कलम में यह ताकत नहीं कि मैं उसे छोड़ दूं। राजा गंगासिंह के बेटे विजय सिंह ने किसी की लड़की से बदतमीजी की तो लड़की के माता-पिता ने राजा गंगासिंह से शिकायत की। गगांसिंह ने अपनी पत्नी से कहा कि विजयसिंह मेरे सामने न आए अगर वह मेरे सामने आएगा तो उसकी खैर नहीं।

विजयसिंह राजा के मन की बात नहीं जानता था। जैसे ही वह राजा गंगासिंह के सामने आया राजा ने उसी समय उसे गोली मार दी बेशक बाद में राजा गंगासिंह ने अपने राजकुमार के नाम से अस्पताल भी बनवा दिया लेकिन सच आखिर सच होता है।

कृतघ्न सदा तकलीफ उठाते हैं भूखे रहते हैं और नर्कों में जाते हैं। एक दुनियावी पिता जो न्यायकारी कहलाता है अपने अपराधी बेटे को माफ नहीं करता तो क्या सच्चा-सुच्चा गुरु अपराधी को माफ कर देगा? इस तरह सन्तमत में भी भ्रष्टाचार फैल जाता है। गलती करने वाले को उसकी गलती की सजा जरूर मिलती है।

महाराज सावन सिंह जी भाई कीर्ति की कहानी सुनाया करते थे कि भाई कीर्ति गुरु गोबिंद सिंह जी के दरबार में रीछ का

खेल देखकर खुश हो रहा था। गुरु गोबिंद सिंह जी ने पूछा, ''भाई कीर्ति! तुम इसे पहचानते हो यह कौन है?'' भाई कीर्ति ने कहा यह एक जानवर है मैं इसे कैसे पहचान सकता हूँ? गुरु साहब ने कहा, ''यह तुम्हारा पिता है।'' भाई कीर्ति ने परेशान होकर कहा कि मेरे पिता ने आपके पिता की सेवा की और बदले में उसे रीछ का शरीर मिला; मुझे भी बंदर का शरीर मिलेगा तो मैं आपकी सेवा क्यों करूं?

गुरु साहब ने कहा, सुनो प्यारे! उसके कर्मों ने उसे रीछ बनाया। आपने सारी संगत के सामने बताया कि कीर्ति का पिता सिक्खों के साथ बुरा व्यवहार किया करता था। एक बार वह प्रसाद बाँट रहा था उस समय कुछ किसान भारी सामान उठाए हुए वहाँ से गुजर रहे थे उन्होंने सोचा कि गुरु का प्रसाद ले लिया जाए। वे प्रसाद की कीमत जानते थे। गुरु की दया प्राप्त करने का मौका नहीं जाने देना चाहते थे इसलिए उन्होंने कीर्ति के पिता से प्रसाद मांगा लेकिन कीर्ति के पिता ने उनको प्रसाद देने की बजाय कहा, ''चुपचाप बैठ जाओ रीछों की तरह क्यों कूद रहे हो?'' कीर्ति के पिता ने उन किसानों को रीछ कहा क्योंकि वे खेतों से आए थे उनके हाथ और पैर मिट्टी से भरे हुए थे। उन्होंने वहाँ गिरा हुआ थोड़ा सा प्रसाद उठा लिया और कहा कि हमारे लिए यही बहुत है भाई! रीछ तुम होवोगे।

गुरु साहब ने भाई कीर्ति को समझाया कि वह खुद के बुरे कर्मों, ईर्ष्या और उन प्रेमी आत्माओं के श्राप के कारण रीछ बना इसलिए हम जो कुछ गलत करेंगे हमें उसकी सजा मिलेगी।

विगड़ै चाटा दुध दा काँजी दी चुखै।
सहस मणा रूई जलै चिणगारी धुखै।

आप प्यार से समझाते हैं अगर हम दूध के बर्तन में थोड़ा सा खट्टा डाल दें तो सारा दूध खराब हो जाता है। आग की छोटी सी चिंगारी हजारों मण रूई को जलाकर राख कर देती है। इसी तरह हम चाहे कितने ही धनवान हों अगर हम दान का धन खाते हैं तो हमारी भी हालत दूध और रूई की तरह हो जाएगी; हमारा खुद का धन भी नष्ट हो जाएगा।

बूरु विणहे पाणीऐ खउ लाखहु रूखै।
जिउ उदमांदी अतीसारु खई रोगु मनुखै।
जिउ जालि पंखेरू फासदे चुगण दी भुखै।

अब आप समझाते हैं कि पागल आदमी अतिसार रोग से मरता है। जब पक्षी जाल में फँस जाता है तो उसके पंख टूट जाते हैं और वह मर जाता है। दान के पैसे को हड़पने वाले का अंत इसी तरह का होता है।

तिउ अजरु झाक भंडार दी विआपे वेमुखै।

जो दान के पैसों को खाते हैं वे लाइलाज बीमारी से तड़पते हैं ऐसा पैसा हजम नहीं होता। उन्हें यह मालूम नहीं होता कि क्या खाना है और क्या नहीं खाना?

अउचरु झाक भंडार दी चुखु लगै चखी।
होइ दुकुधा निकलै भोजनु मिलि मखी।

भाई गुरदास जी हमें बताते हैं कि दान का पैसा खाने वालों के अंदर से वह पैसा कैसे निकलता है? अगर हम गलती से मक्खी निगल जाते हैं तो मक्खी की ही उल्टी नहीं करते बल्कि हमने जो पहले खाया होता है वह भी पेट में से निकल जाता है।

राति सुखाला किउ सवै तिणु अंदरि अखी।
कथा दबी अगि जिउ ओहु रहै न रखी।

अगर आँख में तिनका पड़ जाए तो हम रात को सुख से कैसे सो सकते हैं? अगर आग को घास-फूँस में छिपाकर रखने की कोशिश करेंगे तो वह दबी नहीं रहेगी बल्कि उस घास-फूँस को भी जला देगी।

झाक झकाईऐ झाकवालु करि भख अभखी।
गुर परसादी उबेर गुर सिखा लखी।

एक प्रेमी ने भाई गुरदास जी से पूछा क्या कोई इस जहर से बचा है? भाई गुरदास ने कहा जो गुरु के शिष्य बन जाते हैं, वे गुरु की दया से इस ओर देखते भी नहीं वे इससे बच जाते हैं।

सतगुरु सदा अपने सेवकों पर दया करते हैं लेकिन सवाल गुरु के हुक्म को मानने का है। सन्त सदा प्यार से समझाते हैं कि प्यारेयो! सावधान रहो। अपनी रोजी रोटी ईमानदारी से कमाओ अगर आप ईमानदारी से रोजी-रोटी कमाएंगे तो ही परमात्मा आपके लिए दरवाजा खोलेगा। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

घालु खाए कछु हत्थों देहु, नानक राह पिछाणी सेहु।

अपनी मेहनत से रोजी-रोटी कमाएं और लंगर में भी सेवा डालें तभी आपको परमात्मा मिलेगा, आप सच का रास्ता पहचान सकेंगे। कबीर साहब जिंदगी भर ताना बुनते रहे बड़े-बड़े राजा महाराजा आपके सेवक थे। वे आपको राजमहलों में रख सकते थे लेकिन आपने अपना जीवन अपनी कमाई से चलाया।

कबीर साहब अपनी कमाई को बारह भागों में बाँटा करते थे। आप अपनी कमाई के ग्यारह भाग दूसरों को दान देते और

बारहवां भाग अपने परिवार के लिए रखते थे। इतिहास में आता है कि आप अपने परिवार को खाने के लिए चने देते और संगत को अच्छा भोजन देते थे। माता लोई कहती, ''संगत को अच्छा भोजन मिलता है और हमें केवल चबैना ही मिलता है।''

जब किसी ने माता लोई से पूछा कि कबीर साहब के साथ रहना कैसा लगता है? माता लोई ने कहा, ''कुछ लोग चले जाते हैं और कुछ रहने के लिए आ जाते हैं। रोज ही ऐसा चलता है हम फर्श पर सोते हैं और संगत चारपाई पर सोती है लेकिन जब कबीर बोलते हैं तो लोग इन्हें प्यार से सुनते हैं।''

भक्तों का जीवन ऐसा ही होता है। भक्त 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं और शब्द-नाम की कमाई करने वालों की कद्र करते हैं। धार्मिक स्थान पर सेवा डालने वाले जानते हैं कि यह दूर-दूर से आने वाले प्रेमियों के प्रबंध के लिए है ताकि उन्हें कोई परेशानी न हो, अच्छा लंगर मिले और वे भजन कर सके।

मुझे महाराज सावन सिंह जी के बहुत से सेवकों के साथ जीवन बिताने का मौका मिला है। मुझे उन सेवकों के अंदर ये विशेषताएं देखने को मिलती थी, वे लोग बहुत परहेज रखते थे। महाराज सावन सिंह जी आमतौर पर कहा करते थे, ''मुफ्त में किसी का एक कप चाय भी न पिएं अगर किसी हालात में आपको किसी के यहाँ भोजन करना पड़ जाए तो उसके बदले में उसका कुछ काम कर दें। उसके पशुओं को चारा डाल दें या उसके घर का कोई काम करके अपना कर्ज उतार दें।''

आप प्यार से कहते हैं, ''सन्त लंगर उनके लिए चलाते हैं जो प्रेमी वहाँ आकर रात काटते हैं, वे सतसंग सुन सकें भजन

करके फायदा उठा सकें लेकिन जो प्रेमी भजन नहीं करते सेवा नहीं करते उनके लिए यह लंगर जहर बन जाता है। हम अपना भोजन खाकर भजन करें इससे हमारी आत्मा मजबूत होगी अगर हम दूसरों का भोजन खाएंगे तो हमारी आत्मा कमजोर हो जाएगी और हम भजन के लिए जाग नहीं पाएंगे।''

आप राबिया बसरी की कहानी पढ़कर देखें! एक दिन वह भजन करने के लिए नहीं उठ सकी। उसके सेवकों को अनुभव हुआ कि राबिया बसरी ने चोला छोड़ दिया है। अगले दिन सेवक इकट्ठे होकर राबिया बसरी के पास पहुँचे और उन्होंने अपना अनुभव बताया। राबिया बसरी ने कहा, ''मैं बीमार थी इसलिए भजन पर नहीं बैठ सकी।'' आज भी हमारे सेवकों को अनुभव होते हैं अगर मैं आपको मिसालें दूँ तो अनेकों ही मिल जाएंगे जिनको अनुभव होते हैं वे गुरु की हर हालत को देखते हैं।

एक बार की बात है कि मैं अमेरिका गया हुआ था। वहाँ मुझे बहुत तेज बुखार हो गया। पप्पू की माता को अनुभव हुआ कि मैं

बीमार हूँ। पप्पू की माता ने पत्र में लिखा कि बाबा जी की तबीयत ठीक नहीं वह मुझे लेटे हुए नजर आए हैं। मैंने पप्पू से कहा कि हम लोग बहुत दूर आए हुए हैं वे लोग फिक्र करेंगे तुम लिख दो कि बाबा जी बिल्कुल ठीक हैं।

जब हमने अमेरिका से वापिस आना था तो मैंने पप्पू से कहा कि किसी से झूठ बोलना अच्छा नहीं, चाहे हमने उनके भले के लिए ही ऐसा किया था। अब तुम उनको पत्र लिख दो कि आपका अनुभव ठीक था उस दिन मैं बीमार था लेकिन हम आपको चिन्ता से ऊपर रखना चाहते थे। ऐसे अनेक प्रेमी हैं जिनके पास गुरु होता है अगर हम ईमानदारी से रोजी-रोटी कमाते हैं तो भजन करने के लिए जोश और भावना बनी रहती है।

जिउ घुण खाधी लकड़ी विणु ताणि निताणि।
जाणु डरावा खेत विचि निरजीतु पराणी।

आप कहते हैं कि जो दान का धन खाते हैं वे दीमक से खाई हुई लकड़ी की तरह होते हैं। वे ऊपर से तो सुंदर दिखाई देते हैं लेकिन अंदर से खोखली लकड़ी की तरह होते हैं; उनमें ताकत नहीं होती। किसान लोग खेतों में पक्षियों को डराने के लिए पुतला खड़ा कर देते हैं दान का पैसा खाने वालों की भी यही हालत होती है।

जिउ धूअरु झडुवाल दी किउ वरसै पाणी।
जिउ थण गल विचि बकरी दुहि दुधु न आणी।

जिस तरह धुँए के बादलों से बारिश नहीं होती। बकरी के गले में लटकते थनों से दूध नहीं निकलता। दान का पैसा खाने वालों की भी यही हालत होती है। कबीर साहब कहते हैं:

मान गया आदर गया नैनन गया स्नेह,
ये तीनों ओदों गए जद आखया कुछ दे।

जब हम किसी के आगे हाथ फैलाते हैं तो आदर मान और आँखों का स्नेह चला जाता है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''आप किसी से माँगने से पहले दस बार सोचें लेकिन देते समय मत सोचें।''

झाके अंदरि झाकवालु तिस किआ नीसाणी।
जिउ चमु चटै गाइ महि उह भरमि भुलाणी।

महात्मा बाणी लिखते हुए किसी जाति के प्रति द्वेष भावना नहीं रखते बल्कि सच्चाई बयान करते हैं। किसी ने भाई गुरदास से पूछा, ''दान का धन खाने वालों की क्या पहचान है?'' भाई गुरदास जी कहते हैं, ''जिस गाय का बछड़ा मर जाता है वह दूध नहीं देती। जानवर रखने वाले नकली बछड़ा बनाकर उसमें घास-फूँस भरकर जिन्दा बछड़े की तरह बना देते हैं। गाय उस मरे हुए बछड़े को सुबह-शाम चाटते हुए दूध दे देती है लेकिन उसे यह मालूम नहीं कि वह मरा हुआ है। उसी तरह जो दान का पैसा हजम करते हैं वे मरे हुए शरीरों को चाटते हैं।''

गुछा होइ धिकानूआ किउ वड़ीऐ दाखै।
अकै केरी खखड़ी कोई अंबु न आखै।
गहणे जिउ जरपोस दे नहीं सोइना साखै।
फटक न पुजनि हीरिआ ओइ भरे बिआखै।
धउले दिसनि छाहि दुधु सादहु गुण गाखै।
तिउ साध असाध परखीअनि करतूति सु भाखै।

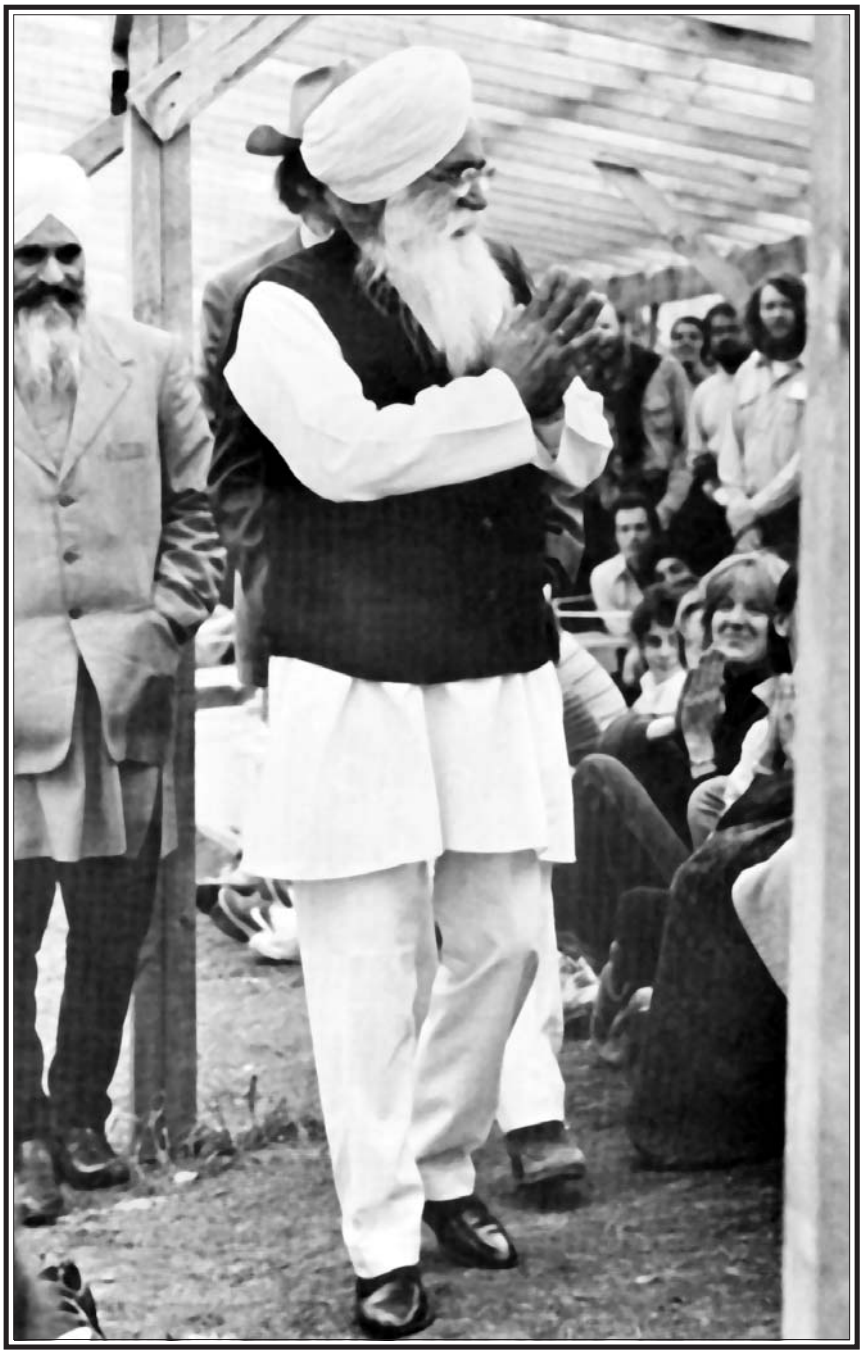

आप प्यार से कहते हैं कि जिस तरह निमोली के गुच्छे को अंगूर का गुच्छा नहीं कहा जा सकता। नकली गहनों को असली गहने जैसा कैसे कह सकते है; शीशे को हीरा नहीं कहा जा सकता उसी तरह छाछ और दूध का रंग सफेद होता है लेकिन चखते ही उनकी असलियत का पता लग जाता है।

इसी तरह साधु और असाधु आसानी से पहचाने जा सकते हैं। साधु में यह गुण है कि वह खुद भवसागर को पार कर जाता है और नाम की ताकत से अपनी संगत को भी पार ले जाता है। साधु ने अपने अंदर नाम को प्रकट किया होता है।

असाधु खुद डूबा होता है जो उसके पीछे लगते हैं वह उन्हें भी डुबो देता है। जो खुद डूबा हुआ है वह दूसरों को कैसे पार कर सकता है? हम कहते हैं कि देखो! इसकी आवाज कितनी अच्छी है, यह कितना अच्छा बोलता है, कितना पढ़ा-लिखा है लेकिन आप देखें! इसने कितने साल भजन-अभ्यास किया है, क्या कभी अंदर गया है क्या इसने अंदर प्रकाश देखा है?

भाई गुरदास जी ने इस शब्द में हमें बड़े प्यार से समझाया कि भजन करने से हमारे अंदर नाम प्रकट होगा। हमें ईमानदारी से रोजी-रोटी कमाकर अपना पेट पालना चाहिए और गुरु घर में दसवंद डालनी चाहिए। दूसरों की कमाई पर नहीं जीना चाहिए, आलसी नहीं बनना चाहिए।

***

धन्य अजायब

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया–मेहर से मुम्बई में 4 जनवरी बुधवार से 8 जनवरी रविवार 2012 तक सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

आप सबके चरणों में निवेदन है कि सतसंग में पहुँचकर सन्तवचनों से लाभ उठाकर अपना जीवन सफल बनाएं।

भूरा भाई आरोग्य भवन,
शान्तिलाल मोदी मार्ग (नज़दीक मयूर सिनेमा)
कांदिवली (पश्चिम) मुम्बई – 400 067
फोन – 09 833 00 4000